छुटकारा व उद्धार

छुटकारा व उद्धार: पाठयक्रम

टिप्पणियाँ —

कक्षा #1:

I. परिचय।

II. उद्धार:

क. ईश्वरीय मीमांसा सम्बन्धी सात प्रमुख विचार।

ख. उद्धार के प्रस्ताव के प्रति मनुष्य की प्रतिक्रिया।

कक्षा #2:

II. उद्धार: (जारी.)

ग. उद्धार की नीवें।

III. छुटकारा: (जारी.)

क. उद्धार की प्रस्तावना।

ख. आदमः एक वास्तविक ऐतिहासिक मनुष्य।

कक्षा #3:

III. छुटकारा: (जारी.)

ग. पहले और अन्तिम आदम की सार्वभौमिकता।

घ. मूल पुरूष के रूप में मसीह।

कक्षा #4:

III. छुटकारा: (जारी.)

ङ. पापरहित स्वभाव फिर भी गम्भीर परीक्षाओं में पड़ा मसीह।

च. छुटकारे का तरीका: जी उठे मसीह और पतित आदम की तुलना।

छ. छुटकारे का परिणामः पुनः प्राप्त करना, पराजित करना, पार करना।

कक्षा #5:

III. छुटकारा: (जारी.)

ज. आदम की तुलना में मसीह की श्रेष्ठता।

झ. मसीहः छुटकारे की दौड़ का शिरोमणी।

ञ. पाठयक्रम का निष्कर्ष; परीक्षा।

टिप्पणियाँ _

छुटकारा व उद्धारः परीक्षा

सम्भावित 20 सूत्रीय प्रश्न

१) उद्धार से सम्बन्धित सात प्रमुख ईश्वरीय मिमांसा के विचारों सूचिगत व परिभाषित करें (पृष्ठ १९६)?

२) परिवर्णी शब्द "AKT" का इस्तेमाल करते हुए बताएं कि विश्वास करने का अर्थ क्या होता है (पृष्ठ १९८)।

३) छुटकारे के तरीके को दिखाने के लिये समझाएँ कि किस प्रकार से मसीह की तुलना आदन के साथ की जा सकती है। (पृष्ठ २१२, २१३)?

सम्भावित १० सूत्रीय प्रश्न

१) उद्धार से सम्बन्धित दो प्रमुख धर्मशास्त्र सम्बंधित विचारों का चुनाव करें कि उनका उद्धार से क्या सम्बन्ध है (पृष्ठ १९५)?

२) दो या तीन वाक्यों में यह समझाने का प्रयास करें कि आदम के इतिहास के बारे में जानकारी रखना क्यों महत्वपूर्ण है? (पृष्ठ २०२, २०३)?

३) मूल पाप के सिद्धान्त का बचाव करने के लिए दो पदों का उदहारण दें (पृष्ठ २०५)?

४) यीशु ने किस प्रकार आज्ञाकारिता सीखी? अपने उत्तर पर क्सी एक पद का उदहारण दें (पृष्ठ २०९)?

५) तीन ऐसे विशेष तरीकों का उल्लेख करें जिनके द्वारा दूसरे आदम ने ने मानवजाति के लिये परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने में पहले आदम को पीछे छोड़ दिया। (किसी हवाले की ज़रूरत नहीं है (पृष्ठ २१५, २१६)?

६) कोई एक ऐसा तरीका बताएँ जिसके द्वारा हम यह साबित कर सकें कि हमें पहले आदम की तुलना में दूसरे आदम में अधिक चीजें प्राप्त होती हैं। (पृष्ठ २१७)?

छुटकारा व उद्धार

I. पाठयक्रम का परिचय

टिप्पणियाँ –

लेखक का दृष्टान्तः

एक लड़का समुद्र के किनारे रहा करत था। उसे नावें बहुत पसन्द थीं। वह प्रतिदिन समुद्र में आती हुई नावें को निहारा करता था। एक दिन वह अपनी एक नाव बनाने लगा। उसने ६ दिनों तक काम किया। अतः वह नाव बनकर तैयार हो गयी। वह जल्द ही उस नाव पर सवारी करना चाहता था। जब वह नाव को पानी में डाल ही रहा था हवा ने अपनी दिषा बदल ली। हवा के प्रचण्ड बल के कारण नाव उसकी पकड़ से बाहर हो गयी और देखते ही देखते उसकी आंखों से ओझल हो गयी। लड़का रोने लगा। वह लड़का प्रतिदिन समुद्र के किनारे उस स्थान पर आकर अपनी नाव को ढूंढा करता था। लेकिन वह नाव उसे नहीं मिली। एक दिन समुद्र के किनारे घूमते हुए उसकी नज़र एक गोदाम की खिड़की पर पड़ी जहां पर एक नाव थी। यह उसकी खोई हुई नाव ही थी। वह दौड़कर गोदाम पर गया और उसके मालिक से कहने लगा यह मेरी नाव है। मालिक ने कहा कि अगर उसे वह नाव चाहिए तो उसे $10 देने होंगे। लड़का उससे बहस करने लगा। अन्त में उसने उसे पैसे दे दिये। उसके पास केवल उतने ही पैसे थे। जब लड़का गोदाम से अपनी नाव को लेकर निकला, तब उसने नाव से कहा, **मेरी प्यारी नाव, तू दो बार मेरी है। तू पहले मेरी इसलिए थी क्योंकि मैं ने तुझे बनाया था और अब तू मेरी इसलिए है क्योंकि मैं ने तुझे दाम देकर खरीदा है।**

परमेश्वर ने हमें बनाया। उसके बाद उसने हमें वापस पाने के लिए बहुत बड़ा दाम भी चुकाया है। यह छुटकारे और उद्धार की कहानी है।

अपनी कहानी को यहाँ लिखें:

छुटकारा व उद्धार

टिप्पणियाँ —

क. मसीहियत का ह्रदय।

१. जिस क्षण आदम अदन की वाटिका में पाप में गिरा, उसी क्षण परमेश्वर ने मानवजाति के लिए एक योजना तैयार की। इसे छुटकारे और उद्धार की योजना कहा जाता है।

क. बाइबल में उत्पत्ति ३:१५ से प्रकाशितवाक्य २२:१४ में इस योजना के प्रगटीकरण को देखा जा सकता है।

ख. यह बन्धन ही बाइबल को एक साथ पिरोकर रखे हुए। यह संरचना ही सम्पूर्ण ईश्वरीय मिमांसा का आधार है।

ग. छुटकारा और उद्धार बाइबल के प्रमुख विषय हैं।

२. उद्धार, परमेश्वर और मनुष्य का अंतिम लक्ष्य है। सभी मनुष्य उद्धार या मुक्ति प्राप्त करना चाहते हैं। प्रभु भी चाहते हैं कि सभी मनुष्यों का उद्धार हो (१ तीमुथियुस २:४; २ पतरस ३:९)। थिओलोजी के हर क्षेत्र की नींव के रूप में धनी होने के कारण, उद्धार के सिद्धान्त को कई बार थिओलोजी का "दादा" कहा जाता है।

३. छुटकारा, उद्धार की योजना है। यह उद्धार के लिए परमेश्वर की रणनीति है।

ख. इस पाठयक्रम की विषय वस्तु।

१. हम उद्धार की सामान्य शिक्षा प्रदान करेंगे। यह शिक्षा अति संक्षिप्त होगी और यह शिक्षा हमें छुटकारे के एक दृष्टिकोण का विशेष रूप में अध्ययन करने के लिये तैयार करेगी।

२. हम दूसरे आदम अर्थात मसीह के दृष्टकोण से छुटकारे का अध्ययन करेंगे। इस अध्ययन के द्वारा हम समझ सकेंगे कि छुटकारे में कौन-कौन सी चीजें शामिल होती हैं, इसकी आवश्यकता क्यों थी, और यह किस प्रकार से पूरा हुआ।

छुटकारा व उद्धार

टिप्पणियाँ —

ग. उद्धार।

क. ईश्वरीय मिमांसा सम्बन्धी सात प्रमुख विचार।

लेखक की टिप्पणी:

सबसे पहले हम इस सिद्धान्त में सम्मिलित ईश्वरीय मिमांसा सम्बन्धी सात प्रमुख विचारों को सुनकर उद्धार की सीमा पर विचार करेंगें।

१. छुटकारा - उद्धार की योजना या रणनीति।

२. पुर्नजीवन - उद्धार की ऊर्जा व वास्तविकता।

३. मेल मिलाप - उद्धार का रिश्तों से जुड़ा पक्ष।

४. प्रायश्चित - उद्धार का कार्य या उसकी कीमत।

५. धर्मी ठहराना - उद्धार का कानूनी परिणाम।

६. धार्मिकता - उद्धार से प्राप्त होने वाला स्थान।

७. पवित्रीकरण - उद्धार की प्रक्रिया है।

चर्चा का बिन्दु

उद्धार में निहित सात प्रमुख विचारों को समझने और उन पर चर्चा करने हेतू प्रोत्साहित करने के लिए दिये गये मानचित्र का उपयोग करें।

छुटकारा व उद्धार

टिप्पणियाँ —

उद्धार के विचार	परिभाषा	बाइबल के पद	यह किस तरह पूरे हुए	मानवीय प्रतिक्रिया	परिणाम
छुटकारा	खोई हुई चीज़ को वापस प्राप्त करना	तीतु. २:१४ भजन. १०३:४ १पतरस १:१८ गलातियों ३:१३	विजय या शूरवीर के रूप में मसीह (१कुरि. १५:५७)	विश्वासः राज्य करने वाले जयवन्त परमेश्वर पर विश्वास करना।	समृद्धि; अधिकार; सफलता
पूर्वजीवन	पुनः जीवन कर देना, नया जीवन देना, नया जन्म देना	यूह. ३:३-६ इफि. २:१ २ कुरि. ५:१७ १ यूह. ५:१ रोमि. ६:४-११	जीवन दाता के रूप में मसीह (यूह. १०:२८; १कुरि. १५:४५)	विश्वासः मान लेना कि परमेश्वर नया जीवन दे सकते हैं और देते हैं।	नयापन; परिवर्तन, नयी शुरूआत
मेल मिलाप	शत्रुओं के बीच मेल मिलाप	२कुरि. ५:१९ रोम. ५:६-११ १ यूह. १:३	मध्यस्थ के रूप में मसीह (इब्रा.१२:२४)	विश्वासः मान लेना कि परमेश्वर हमें हर अवस्था में स्वीकार करते हैं।	समागम; संगति, परमेश्वर के साथ सम्बन्ध
प्रायश्चित	ईश्वरीय बलिदान के द्वारा दोषी जन का मेल मिलाप होना।	रोमि. ४:६-९ १ पत. १:१९ इब्रानि. ९:१३-२२ २ कुरि. ५:२१ रोमि. ४:७	हमारे विकल्प या बलिदान के रूप में मसीह (१पतरस ३:१८)	विश्वासः मान लेना कि हमारे पाप ढ़ाँप गिये गए हैं। पश्चातापः धन्यवाद व आभार के साथ	दोष का मिटाया जाना, क्षमा
धर्मी ठहराना	परमेश्वर के सम्मुख एक दोषी को धर्मी ठहराना	रोमि. ५:१,९ इब्रा. ५:९	निष्पाप मसीह (२ कुरि. ५:२१)	पश्चातापः हमारे पाप प्रगट हो जाते हैं	शान्ति; क्रोध का हटना
धार्मिकता	परमेश्वर के सम्मुख निर्दोष ठहरना	फिलि. ३:९ रोम. १०:१-१० इफि. २:१०	हमारा प्रतिनिधि मसीह (१ यूह. २:१)	पश्चातापः जब हमें यह पता चल जाता है कि हम इसे प्राप्त नहीं कर सकते।	हिम्मत; रिश्ता; पवित्रता
पवित्रीकरण	पवित्र करके अलग करना	१थिस्स..५:२३ फिलि. २:१२,१३ रोम. ८:२९ इब्रा. २:११	हमारा आदर्श व सिद्ध करने वाला मसीह (यूह.१३:१५; इब्र.१२:२)	पश्चातापः पाप से फिरने की सक्रिय प्रकिया।	परमेश्वर के स्वरूप में परिवर्तित होना; भले कार्य

टिप्पणियाँ –

लेखक की टिप्पणीः

उद्धार से जुड़ा हर पक्ष इस समझ पर आधारित है कि यीशु उसकी आत्मा के द्वारा विश्वासियों में वास करता है (गला. २:२०)।

उद्धार के प्रति मनुष्य की प्रतिक्रिया के दो आयाम होते हैंः
१) पश्चाताप या मन फिराव;
२) विश्वास करना (मरकुस १:१५)।

चित्र में हम ने उद्धार के सात "विचारों" में किसी न किसी एक को चिन्हित किया है। हालांकि, हर एक विचार में प्रतिक्रियाओं के दोनों आयाम दिये गये हैं।

ख. उद्धार के प्रस्ताव के प्रति मनुष्य की प्रतिक्रिया।

१. पश्चाताप।

क. परिभाषाः पुराने से नये या बुराई से भलाई की ओर **फिरना** (प्रेरितों. ३:१९)।

१) यह केवल शर्मिन्दा (खेदित) होना नहीं है।

२) यह केवल बुरा (आत्म-ग्लानि) महसूस करना नहीं है।

ख. प्रेरणाः मुझे क्यों पश्चाताप करना चाहिए?

१) परमेश्वर की उपस्थिति और घनिष्ठता के कारण (मत्ती ३:२)।

२) सुसमाचार के सन्देश (जीवन, मृत्यु और यीशु का पुनरूत्थान) के कारण।

क) मेरे लिए परमेश्वर द्वारा किये गये कामों का प्रभाव मेरी अहमियत को दर्शाता है (रोम. २:४)।

ख) मेरे द्वारा भविष्य में किये जाने वाले कामों का प्रभाव परमेश्वर की अहमियत को दर्शाता है (रोमियों २:४)।

३) क्योंकि मुझे मेरे पापों से क्षमा पाना ज़रूरी है (प्रेरितों २:३८; ३:१९)।

टिप्पणियाँ –

२. विश्वास (भरोसा)।

क. ज्ञान।

१) यह आवश्यक है (रोमियों १०:१७)।

२) लेकिन, केवल उद्धार पा लेना ही काफी नहीं है (याकूब २:१९)।

ख) अनुमति।

१) सुसमाचार की सच्चाई को जानना और उसे मानना। इस में उन बातों का अनुपालन करना भी शामिल होता है।

२) मसीह द्वारा हमें बचाने के लिए किये जाने वाले जानना तथा उन्हें मानना। इसमें उस पर निर्भरता शामिल है।

ग) भरोसा।

१) व्यक्ति अपने से बाहर देखता है (नीतिवचन ३:५,६)।

२) वह मसीह की ओर देखता है (इब्रा. १२:२)।

३) ये दोनों बिन्दु दर्शाते हैं कि उनमें एक व्यक्तिगत सम्बन्ध है।

लेखक की टिप्पणीः

विश्वास के इन तीन पक्षों को याद रखने के लिए आप सम्भवतः इसका परिवर्णी शब्द बनाना चाहेंगे जैसा कि इंगलिष भाषा में Assent, Knowledge, और Trust के लिए AKT है। हालांकि हम जानते हैं कि यह करना इंगलिश के अलावा अन्य भाषाओं में संभव न हो। लेकिन विश्वास करने के लिए आपको तीनों कामों को करना ज़रूरी है क्योंकि विश्वास करने में आज्ञापालन करना शामिल होता है (याकूब २:१७)।

टिप्पणियाँ —

३. समर्पण।

क. उद्धार की प्रक्रिया में मनुष्य के हिस्से का काम प्राप्त करना (यूहन्ना १:१२) है। लेकिन प्राप्त करने के लिए, मनुष्य को पश्चाताप और विश्वास करना चाहिए। पश्चाताप और विश्वास करने के लिए मनुष्य को समर्पण करना चाहिए।

ख. उसे परमेश्वर के विरूद्ध लड़ना बन्द कर देना चाहिए। पश्चाताप और विश्वास का निचोड़ समर्पण की क्रिया है (मत्ती १६:२४, २५)।

ग. उद्धार की नीवें।

१. चार बातें हैं जिन्हें **परमेश्वर** उद्धार की प्रक्रिया में अवश्य करते हैं।

क. व्यक्ति को अपने पास खींचते हैं (यूहन्ना ६:४४)।

ख. व्यक्ति को पुर्नजीवित करते हैं (यूहन्ना ३:१-५)।

१) इसका अर्थ है कि वह व्यक्ति **स्वर्ग की ओर से** नया जन्म प्राप्त होना चाहिए।

२) देखें यीशु ने किस प्रकार स्वर्ग की ओर से जन्म प्राप्त किया था (लूका १:३५)।

ग. व्यक्ति के पापों को धो डालते हैं (यूहन्ना १३:४-१०; प्रेरितों. २२:१६)।

१) इसे पानी के बपतिस्में द्वारा दिखाया जाता है।

२) ध्यान दें कि यीशु को किस प्रकार बपतिस्मा दिया गया था (मरकुस १:९)।

घ. व्यक्ति को मसीही जीवन जीने की शक्ति प्रदान करते हैं (प्रेरितों १:८;२:३८)।

१) वह इस काम को विश्वासी को पवित्र आत्मा द्वारा बपमिस्मा देकर प्रगट करता है।

२) देखें कि यीशु को किस प्रकार पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया था (मरकुस १:१०)।

२. क्रूस का कार्य तथा क्रूस का मार्ग।

छुटकारा व उद्धार

टिप्पणियाँ —

चर्चा का बिन्दु

निम्नलिखित चित्र का अध्ययन करें तथा इसके आधार पर चर्चा को प्रोत्साहित करें।

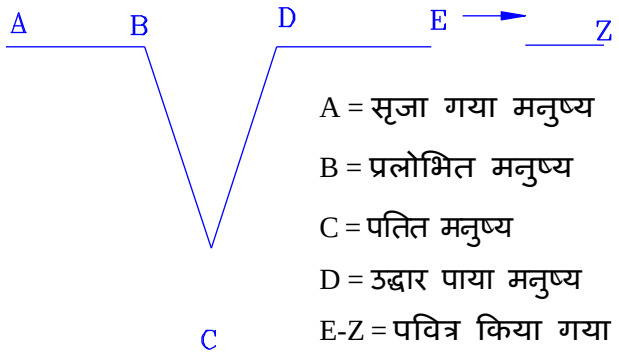

A = सृजा गया मनुष्य

B = प्रलोभित मनुष्य

C = पतित मनुष्य

D = उद्धार पाया मनुष्य

E-Z = पवित्र किया गया मनुष्य

क. क्रूस का कार्य (A से लेकर D तक)।

१) इसमें यीशु द्वारा मेरे लिए किए जाने वाले सारे कार्य शामिल हैं। इसमें मेरे द्वारा किये जाने वाले कार्यों के लिए कोई स्थान नहीं है।

२) इसका केन्द्र बिन्दु मसीह में विश्वास है।

३) ध्यान दें, "कार्यों के द्वारा उद्धार" थियोलोजी अर्थात विचारधारा किस प्रकार यह साबित कर पाएगी कि एक मृतक मनुष्य, पतित मनुष्य और उद्धार पाए हुए मनुष्य के बीच के पहाड़ को कैसे चढ़ पाया।

ख. क्रूस का मार्ग (E से लेकर Z तक)।

१) इसे समय और परिपक्वता की प्रक्रिया के साथ सीखा जाता है।

२) विशेष तौर पर इसमें यीशु के जुए को उठाना सीखना और यीशु को अपने भीतर जीने की अनुमति देना सीखना शामिल होता है (मत्ती ११:२९; गला. २:२०)।

चर्चा का बिन्दु

क्रूस के कार्य और क्रूस के मार्ग के बीच में क्या अन्तर है? किस प्रकार से यह अन्तर मसीहियत को अन्य धर्मों और विचारधाराओं से अलग करता है।

छुटकारा व उद्धार

टिप्पणियाँ –

III. छुटकारा।

क. छुटकारे का परिचय।

१. परिभाषा।

क. जैसा कि हम ने पहले कहा था, छुटकारा उद्धार की योजना व रणनीति है।

ख. यह खोई हुई चीज़ों को वापस प्राप्त करने की प्रक्रिया है।

१) छुड़ाने का अर्थ पुनः प्राप्त करना है।

२) इसका अर्थ वापस लेना या उन चीज़ पर दावा करना है जो पहले आपकी थी।

२. पहले आदम से अंतिम आदम तक (मृत्यु से जीवन तक)।

क. मनुष्य को जो कुछ मूल रूप में परमेश्वर द्वारा दिया गया था वह सब अदन की वाटिका में मनुष्य के पतन के समय में आदम के हाथों से छिन गया था। उसे छुड़ाना ज़रूरी है। यीशु मसीह, अर्थात दूसरा आदम (१कुरि. १५:४५) आए ताकि जो कुछ आदम से छिन गया था वह उसे वापस छुड़ा सके।

१) बाइबल में प्रथम आदम से लेकर दूसरे आदम के जीवन के माध्यम से छुटकारे की कहानी का उल्लेख किया गया है।

२) इसका अर्थ है, कि इसमें मृत्यु से छुटकारा पाकर जीवन में प्रवेश करने, या खोई हुई चीज़ को फिर से हासिल करने की कहानी छुपी हुई है।

ख. पौलुस छुटकारे के इस दृष्टिकोण का वर्णन १ कुरिन्थियों १५:२०-२६ और रोमियों ५:१२-२१ में करता है जिसे हम आदम-मसीह की थिओलोजी भी कह सकते हैं।

१) इस पाठ्यक्रम के बाकि भाग में हम छुटकारे के विचार पर अध्ययन करते हुए इस थियोलोजी पर ही ध्यान देंगे।

टिप्पणियाँ —

२) हमारा अध्ययन निम्नलिखित पूर्वधारणाओं पर विचार करेगाः

क) यीशु के लिए मसीह के रूप में योग्य ठहरने के लिए, मानव जाति को उन सारी चीज़ों को वापस देना होगा जिन्हें आदम ने परमेश्वर से विद्रोह करने पर खो दिया था।

ख) यीशु परमेश्वर की उस योजना की पूर्णता है जो परमेश्वर ने मनुष्य के लिए तैयार की थी। प्रथम आदम और दूसरे आदम के बीच में सम्बन्ध ठीक वैसा ही है जैसा कि पतित मनुष्य और छुटकारा पाये हुए मनुष्य के बीच में था।

चर्चा का बिन्दु

रूत की पुस्तक में पाये जाने वाले "छुड़ानेवाल कुटुम्बी" की कहानी पर ध्यान दें (रूत २:२०; ३:२; ३:९-१३; और ४:१-२२)। देखें कि यह किस प्रकार से मसीह के उदाहरण (पूर्वाभास) को दर्शाता है, जो बाद में संसार में एक "छुड़ानेवाले कुटुम्बी" के रूप में आएगा। पुराने नियम में, संक्षिप्त रूप में मसीह के पूर्वाभासी सकेंतों पर चर्चा करें। पुराने नियम के इन नमूनों का क्या अभिप्राय है जो भविष्य में यीशु से सम्बन्धित बातों को प्रगट करते है?

ख. आदमः एक सच्चा वास्तविक व्यक्ति।

१. अधिकतर सुसमाचार को ग्रहण करने वाले समाजों में, आदम की पृष्ठभूमि का बचाव करने की ज़रूरत नहीं पड़ती है। क्योंकि उनके बीच में बाइबल को परमेश्वर के वचन के रूप में स्वीकार किया जाता है।

२. लेकिन कई धार्मिक समुदायों में, आदम और हव्वा की कहानी में कुछ ऐसे दृष्टिकोण विद्यमान हैं जो आदम और हव्वा को वास्तविक ऐतिहासिक जन नहीं मानते।

क. कहानी को ऐतिहासिक घटना मानने के बदले, उसे एक रूपक कथा के रूप में समझा जाता है, जो किसी आत्मिक सत्य को समझाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला अन्य दृष्टान्त होता है।

ख. यह दृष्टिकोण कहता है कि यह कहानी केवल एक “शिक्षा देने का नमूना” है।

टिप्पणियाँ –

३. लेकिन, एक ऐतिहासिक आदम के विद्यमान होने से इंकार करने के धर्मशास्त्र आधारित आशयों के परिणामस्वरुप खतरनाक परिस्थियाँ सामने हैं ।

क. यदि पहला आदम वास्तविक नहीं था, तो फिर हमें दूसरे आदम की क्या ज़रूरत थी? इस प्रकार के विचारों को मानने का परिणाम स्वाभाविक होता है।

१) जल्द ही यीशु की ऐतिहासिकता पर प्रश्न उठने लगता है।

२) उसके बाद, यीशु के चमत्कारों पर प्रश्न उठने लगता है।

३) और अन्त में, यीशु की ईश्वरीयता पर प्रश्न उठने लगते हैं।

ख. जो लोग "शिक्षा के नमूने" के दृष्टीकोण को प्रस्तुत करते हैं,वे पाप और सृष्टि के बीच की खाई को देखते हैं। बल्कि पाप और सृष्टि को हमजोली के रूप में देखा जाता है।

१) इस कारण, पाप को मनुष्य और सृष्टि की विरासत के रूप में देखा जाता है। अर्थात यह तो मनुष्य के जीवन का एक स्वाभाविक भाग है।

२) यदि यह सत्य है, तो यीशु मूल मनुष्य के प्रतिनिधी नहीं हो सकते हैं।

३) इसके अलावा, इससे पाप के प्रति मनुष्यों की दोष भावना खत्म हो जाती है।

४) शर्मिन्दगी व दोषभावना में अभाव का परिणाम पश्चाताप में अभाव होता है, जिसका परिणाम पापों की क्षमा में अभाव होता है।

५) इन सब की वजह से, एक ऐतिहासिक यीशु की आवश्यकता में कमी आती है जो हमें छुटकारा प्रदान करता है।

चर्चा का बिन्दु

क्या आप देख सकते हैं कि एक वास्तविक आदम का खण्डन करना किस प्रकार वास्तविक ऐतिहासिक उद्धारकर्ता के कामों को प्रभावरहित बना सकता है? सामने आने वाले किसी भी प्रश्न या टिप्पणी पर चर्चा करें।

टिप्पणियाँ —

ग. पहले और अन्तिम आदम की सार्वभौमिकता।

१. आदम को एक वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्ति को देखने के लिए, उसे एक सार्वभौमिक तौर पर प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्ति के रूप में देखा जाना भी ज़रूरी है।

क. इब्रानी भाषा में आदम का अर्थ "मनुष्य" होता है।

ख. अतः आदम से की गयी वाचा वास्तव में मनुष्य से की गयी प्रतिज्ञा थी। जब वह वाचा टूटी तब वह मनुष्य के द्वारा तोड़ी गयी।

१) जब हम इस बात को समझ जाते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य के साथ एक वाचा बांधी थी और मनुष्य ने उस वाचा को तोड़ दिया, तब हमें सार्वभौमिक प्रायश्चित की आवश्यकता समझ में आती है।

२) दूसरा आदम, अर्थात यीशु **सम्पूर्ण** मानवजाति के लिए मरे। वह यहूदियों और गैर यहूदियों के लिए मरे (ध्यान दें कि पौलुस ने यीशु को दूसरा मूसा नहीं कहा)।

३) यीशु सारे मनुष्यों के लिए इसलिए मरे क्योंकि सारे मनुष्य परमेश्वर की वाचा को तोड़ने के दोषी हैं। वह सबके लिए इसलिए मरे "क्योंकि सभी ने पाप किया है और सभी लोग परमेश्वर की महिमा से रहित हो गये हैं" (रोमियों ३:२३)।

२. जिस प्रकार से लूका ने बड़ी सावधानी के साथ यीशु की वंषावली को वापस आदम तक लिखा (लूका ३:३८), उसी प्रकार से पौलुस भी छुटकारे की योजना के बारे में बताते समय आदम और उसके पाप की सार्वभॉमिकता को लेकर सतर्क था।

क. इफिसियों के २ अध्याय में पौलुस की छुटकारे की थिऑलौजी का वर्णन किया गया है।

ख. इफिसियों २:१-३, ११, १२ का अध्ययन करें।

१) पौलुस ने अन्यजातियों के छुड़ाये जाने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया (पद ११, १२)।

२) वह यहूदियों के छुटकारा पाने की ज़रूरत पर भी बड़ी सावधानी से चिन्हित करता है। (पद ३)

क) पौलुस ने सिखाया कि एक 'सामान्य आवश्यकता' को एक "सामान्य समाधान" की आवश्यकता होती है।

ख) वह वर्णन करता है कि किस प्रकार से पहले आदम के कारण एक सार्वभौमिक आवश्यकता सामने आयी, दूसरे आदम के द्वारा समाधान सामने आया। मनुष्य के पतन (पाप के स्वभाव को) सार्वभौमिक छुटकारे की ज़रूरत है।

टिप्पणियाँ —

३. यहूदियों के लिए, जब आदम ने पाप किया, सभी लोगों ने आदम में होकर पाप किया। इसका अर्थ है कि, उस क्षण से लेकर मनुष्य में पाप का स्वभाव प्रवेश कर गया।

क. जिस प्रकार से भजनकार कहता है, हम पाप में जन्में हैं (भजन ५१:५)।

ख. पौलुस कहता है, हमारे भीतर पाप का स्वभाव पाया जाता है (इफिसियों २:३)।

ग. वह पापी स्वभाव की व्याख्या रोमियों ५:१२, १६ में करता है। एक बार फिर देखें तो, सार्वभौमिक उद्धार (यहूदी और यूनानी के लिए उद्धार) एक आत्मिक आवश्यकता है क्योंकि सार्वभौमिक पाप और मृत्यु आत्मिक वास्तविकताएं हैं।

चर्चा का बिन्दु

आदम के पापों को सार्वभौमिक स्वभाव तथा मसीह के द्वारा छुटकारे के सार्वभौमिक स्वभाव के सम्बन्ध में अन्य प्रश्नों व टिप्पणियों पर चर्चा करें।

घ. मूल मनुष्य के रूप में मसीह।

१. क्या सार्वभौमिक पाप और मृत्यु परमेश्वर की मूल योजना का भाग थे (देखें रोमियों १:१८-२५)।

क. यह स्वाभाविक है कि रोमियों १:१८-२५, उत्प. १-३ अध्याय की विषय वस्तु के द्वारा प्रभावित हैं।

१) मनुष्य को मूलतः परमेश्वर की सेवा करने के लिए बना गया था।

२) सृजी हुई चीज़ों की सेवा व उपासना करने के बाद में मनुष्य उस स्तर से नीचे गिर गया जिस स्तर पर उसकी मूलतः रचना की गयी थी।

ख. रोमियों १:२३ का पुनरावलोकन करें।

१) "परिवर्तित" शब्द के क्या अभिप्राय हैं?

२) "नश्वर" और "अनश्वर" शब्दों के अर्थ में क्या अन्तर है।

टिप्पणियाँ —

ग. इस बात पर भी बहस की जा सकती है कि आदम में पहले अनश्वर रहने की क्षमता थी।

१) निश्चय ही, जीवन का वृक्ष भी बगीचे में था और वह उन पेड़ों में से एक था जिसे आदम छू व इस्तेमाल कर सकता था (उत्प २:९, १६)।

२) यदि आदम के पास अनश्वर रहने की क्षमता न होती तो, उस अनश्वरता को खोना कोई वास्तविक दण्ड नहीं ठहरता। इसके बावजूद भी परमेश्वर ने मृत्यु की सम्भावना को वास्तविक दण्ड के रूप में इस्तेमाल किया (देखें उत्प. २:१७)।

२. पहला आदम जो बन गया उसकी बजाय कुछ और बन सकता था। छुटकारे का अभिप्राय यह है कि दूसरा आदम उस परिस्थिति में विजयी हो गया जिसमें पहला आदम असफल हो गया था।

क. यीशु मसीह, अर्थात सिद्ध मध्यस्थ, मानवजाति का "प्रथम फल" बना गया (१कुरि. १५:२० पर ध्यान दें)। (किसानी के क्षेत्र में देखें तो, पहला फल या पहली फसल, बोये गये बीज के पहले अंकुर होते हैं। वे आनन्ददायी प्रतिज्ञाएं होती हैं कि और अधिक मात्रा में फसल होगी।

ख. निम्नलिखित वाक्य पर मनन करें: **आदम की नहीं बल्कि मसीह की मानवता स्वाभाविक है।**

१) परमेश्वर के अनन्त दृष्टिकोण से देखें तो, मसीह की मानवीयता, आदम की मानवीयता से पहले थी क्योंकि परमेश्वर की योजना आदम के विद्रोह करने से पहले ही बन चुकी थी।

क) आदम, जो देखने में पहले लगता है, वास्तव में वह दूसरे स्थान अर्थात बाद में आया।

ख) मसीह, जो दूसरे स्थान पर दिखाई देता है, वास्तव में पहले स्थान पर है।

२) बहुत से विद्वान बहस करते हैं कि आदम को "पुरूष" या "मनुष्य" कहा जाना चाहिए। दुर्भाग्य से वह "अस्वाभाविक मनुष्य" हो गया।

३) यूहन्ना १९:५ में पिलातुस ने कहा: "देखो, यह पुरूष"। सौभाग्य से, यीशु "स्वाभाविक पुरूष" थे। पहला आदम असफल हो गया, लेकिन मसीह, अर्थात दूसरे आदम ने परमेश्वर की इच्छा को पूरा किया (यशा. ५३:११, १२)।

टिप्पणियाँ —

३. यह समझना बहुत ही महत्वपूर्ण है कि आदम (पुरूष) के लिए जीवन की मूल और नियोजित अवस्था यीशु मसीह के जीवन में पूरी हुई थी।

क. यह समझ हमें यीशु द्वारा क्रूस पर चुकायी गयी बहुमूल्य कीमत को समझने में सहायता करेगी।

१) दूसरे आदम की भूमिका में, मसीह में अनश्वरता विद्यमान है। पाप की मज़दूरी मृत्यु होती है (रोमियों ६:२३), और मसीह में कोई पाप नहीं है (इब्रानियों ४:१५)। उसे मरने की कोई आवश्यकता नहीं है।

२) वह स्वेच्छा से मरा।

३) हम इस स्वेच्छा से मरने के अभिप्राय को **महसूस** कर सकते हैं।

क) परमेश्वर के अपनी सृष्टि के प्रति अद्भुत प्रेम के अभिप्राय।

ख) यीशु मसीह का हमारे लिए विकल्प बनने तथा प्रायश्चित करने का आशय।

ख. यह समझ हमें परमेश्वर के छुटकारे की योजना की श्रेष्ठता व रचनात्मकता को पहिचानने में सहायता करती है।

लेखक की टिप्पणीः

यीशु ने आदम के समान वरन उससे भी बढ़कर मानवता की मांग को पूरा किया। उसने ईश्वरीयता की मांगों को भी पूरी तरह से पूरा किया। वह सम्पूर्ण मनुष्य और सम्पूर्ण परमेश्वर थे, उनमें दोनों का स्वरूप संयुक्त रूप से निहित था लेकिन उनके स्वभाव दो थे। कलीसिया में इस रहस्य पर विश्वास किया जाता और यह बहुत सी विचारधाराओं और झूठे धर्मों के प्रस्थान का मुख्य कारण भी है । कोई भी अन्य धर्म इस प्रकार का दावा नहीं करता है।

टिप्पणियाँ –

१) यीशु, जो **दूसरे** आदम के रूप में पैदा हुआ था, पाप के स्वभाव के साथ पैदा नहीं हुआ था। वह **एक अन्य** मनुष्य के रूप में पैदा नहीं हुआ था।

क) अतः वह मनुष्य के स्वभाव को नाश करने की बजाय उसे पूरा करता है।

ख) इसलिए, रोमिया ८:३ में कहा गया है, कि उसे पापमय शरीर की **समानता** में भेजा गया था।

ग) वह "समानता" में भेजा गया था (ग्रीक भाषा में "omoi"), "यर्थातता" (ग्रीक भाषा में "omo") में नहीं भेजा गया था। ग्रीक भाषा में केवल इसमें एक "iota" अतिरिक्त है।

२) इसका अर्थ यह है कि छुटकारे की रचनात्मकता और श्रेष्ठता ने मनुष्य के उस रूप का नाश नहीं किया जो वह बन गया था, वरन उसने उन बातों को पूरा किया जिसे मनुष्य ने पूरा करना चाहिए।

क) छुटकारा उन चीज़ों पर दावा करता है जिसे मनुष्य ने खो दिया था। वह मनुष्यों द्वारा किये गये कामों को वापस नहीं करता।

ख) छुटकारा घटाने के बजाय जोड़ी गयी चीज़ है। यह उन चीज़ों को जोड़ता है जिसे पहले स्थान पर होना चाहिए था, लेकिन उन चीज़ों को अनिवार्य तौर पर घटाता नहीं (जब तक यीशु वापस आकर पुनः स्वर्ग और पृथ्वी को नहीं बनाते) है जो बाद में आकर जुड़ी हैं।

(१) अतः छुटकारा पाने के बाद भी व्यक्ति पतित संसार में जीवन व्यतीत कर सकता है।

(२) हम अपने जीवन में तब भी छुटकारे का अनुभव कर सकते हैं जब हम बीते जीवन में किये गये कामों के परिणामों का सामना कर रहे हों।

(३) पौलुस दो स्वभावों की सच्चाई के बारे में बोलने के लिए मज़बूर था (देखें गलातियों ५:१७ और रोमियों ७:१४-२०)।

टिप्पणियाँ –

ङ. पापरहित स्वभाव फिर भी गम्भीर परीक्षाओं में पड़ा मसीह।

१. यीशु पापमय शरीर का "यर्थात रूप" नहीं था क्योंकि वह मनुष्य द्वारा नहीं वरन पवित्र आत्मा द्वारा जन्मा हुआ था।

२. वह भी आदम के समान ही निष्पाप जन्मा था।

३. दोनों आदम ही वे पुरूष थे जिनमें सिद्ध जीवन जीने की क्षमता थी।

क. जिस क्षेत्र में आदम असफल हो गया उस क्षेत्र में यीशु ने सफलता प्राप्त की।

ख. यह एक तरीका है जिसके द्वारा बताया जा सकता है कि छुटकारे को एक वास्तविकता बनने के बीच क्या हुआ।

४. हालांकि, आदम के समान यीशु की परीक्षा हुई।

क. ये परीक्षाएं व प्रलोभन वास्तविक थे। यीशु उन पर सहजता से नहीं "चला"। उसने इसके बीच में संघर्ष किया।

१) इब्रानियों ५:७-८ के अनुसार, यीशु ने आज्ञाकारिता सीखने के लिए कष्ट उठाया। उसने किस तरीके से कष्ट सहा? उसने अपने शरीर की अभिलाषाओं के द्वारा कष्ट उठाया (पद ७)।

२) छुटकारे का एक मूल्य है। वह मूल्य केवल क्रूस पर ही नहीं चुकाया गया था, वरन क्रूस के लिए तैयार होते हुए भी यीशु ने अपने जीवन से मूल्य को चुकाया।

३) जिन चीज़ों के द्वारा उसने कष्ट उठाया उनके द्वारा उसने आज्ञाकारिता को सीखा (उसने प्रलोभनों पर जय पायी)।

४) इस संसार में जीवन व्यतीत करते हुए (उसकी परीक्षाओं के दिनों में), उसने आंसू बहाबहाकर प्रार्थनाएं की।

क) अप्राकृतिक चीज़ों को पूरी तरह नष्ट किये बिना प्राकृतिक चीज़ों पर दावा करने के परिणाम स्वरूप यीशु को बहुत कष्ट उठाना पड़ा। जब परमेश्वर हम में अपने छुटकारे के कार्य को पूरा करते हैं, तब यह सब बातें हम में भी सत्य हो जाती हैं।

टिप्पणियाँ –

चर्चा का बिन्दु

इस बिन्दु का पुनरावलोकन करें क्योंकि यह छुटकारे अर्थात घटाने की बजाय जोड़ने वाली उपरोक्त चर्चा से सम्बन्धित है। अब ध्यान दें कि ये सारी चीज़ें हम पर कैसे लागू होती है। इनके अभिप्राय क्या हैं?

२) इस प्रश्न का उत्तर देने में सहायता करने के लिए २ तीमुथीयुस ३:१२ की दृढ़ता पर ध्यान दें। हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारे छुटकारे में हमें एक परदेशी (यह संसार हमारा घर नहीं है)। हम नये प्राणी हैं (जो अभी भी हमारे भीतर रहने वाले पुराने प्राणियों से लड़ रहे हैं), लेकिन हम ऐसे संसार में रहते हैं जिसमें पुराने जीव वास करते हैं। यह प्राकृतिक व अप्राकृतिक के बीच की लड़ाई है। यह असली और नकली के बीच की लड़ाई है। जैसा यीशु के साथ में हुआ था, इसका परिणाम कष्ट होता है (यूहन्ना १५:२०)।

३) अतः, एक तरीके से (यह मानते हुए कि गलातियों २:२० सत्य है), प्राकृतिक और अप्राकृतिक चीज़ों में लगातार लड़ाई होने के कारण, छुटकारे से जुड़े कष्ट लगातार होते रहते हैं (कुलु १:२४; गला ६:१७)।

ख. यीशु के लिए परीक्षाएं इतनी वास्तविक थी कि बाइबल कहती है कि वह हमारी निर्बलताओं में **हमारे साथ** दुःखी हो सकता है (इब्रा ४:१५)।

ग. परीक्षाओं या प्रलोभनों को तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है (१ यूहन्ना २:१६)।

१) शरीर की अभिलाषा।

२) आखों की अभिलाषा।

३) जीविका का घमण्ड।

क) अदन की वाटिका में हव्वा इन सभी परीक्षा से होकर गुज़री थी (उत्प ३:६)।

क) शरीर की अभिलाषाः "वह वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा है"।

ख) आंखों की अभिलाषाः "देखने में मनभाऊ।"

ग) जीविका का घमण्डः "बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य है।"

टिप्पणियाँ –

ख) जंगल में यीशु इन सारी परीक्षाओं से होकर गुज़रे थे (मत्ती ४:१-११)।

(१) शरीर की अभिलाषा: "इन पत्थरों से कह दे कि वे रोटियां बन जाएं" (पद ३)।

(२) आंखों की अभिलाषाः "उसने उसे जगत के सारे राज्य और उनके वैभव दिखाएं" (पद ८)।

(३) जीविका का घमण्डः "अपने आप को यहां से गिरा दे" (ताकि तू दुनिया को दिखा सके कि तू कितना विशेष है: पदः ६)।

लेखक की टिप्पणीः

इस बात पर ध्यान दें कि लूका ने (४:१-१३) मत्ती में दिये गये परीक्षाओं के क्रम को बदल दिया। यीशु की परीक्षा में परिवर्तित किया गया यह क्रम ठीक उस तरह का बन गया जिस तरह से १ यूहन्ना २:१६ और उत्पत्ति ३:६ में यह क्रम निहित है।

इसमें भी कोई आश्चर्य की बात नहीं है। लूका रचित सुसमाचार मत्ती रचित सुसमाचार से अलग है क्योंकि हम देखते हैं कि लूका में यीशु की वंशावली आदम तक वापस जाती है जबकि मत्ती में दिये गये यीशु की वंशावली के लेखे में केवल अब्राहम तक की वंशावली की ही चर्चा की गयी है।

याद रखें कि लूका रचित सुसमाचार एक "सार्वभौमिक सुसमाचार" है। इसका लक्ष्य सम्पूर्ण मानवजाति तक पहुंचना है। यह सार्वभौमिक छुटकारे की बात करता है। यह इस तथ्य पर बात करता है कि मानव जाति को छुटकारा प्रदान करने के लिए, दूसरे आदम अर्थात यीशु को उन सारी परीक्षाओं से होकर गुज़रना आवश्यक था जिनसे पहला आदम होकर गुज़रा था। यह निश्चय ही, छुटकारे का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

घ. जब तक कि यीशु अपने जीवन की अन्तिम परीक्षा में विजयी न हुए (लूका २२:४४ की लड़ाई पर ध्यान दें), तब तक उसकी निष्पाप दशा आदम की उस निष्पाप दशा के समान थी जो उसकी पाप में गिरने से पहले थी।

टिप्पणियाँ —

ङ. खुशखबरी यह है, और सर्वदा रहेगी कि, यीशु मसीह ने इन सारी परीक्षाओं पर विजयी पायी है।

१) मसीह की अपरीक्षित निर्दोषता सम्पूर्ण परम निर्दोषता प्रमाणित ठहरी। छुटकारे को सम्भव बनाने के लिए यह करना आवश्यक था।

२) मसीह ने इसे अपनी योग्यता से पूरा किया। उसने कष्टों को सहकर परीक्षाओं पर विजय प्राप्त की जिसके परिणाम स्वरूप उसे सिद्ध आज्ञाकारी गिना गया।

चर्चा का बिन्दु

हमें अपने ईश्वरीय अध्ययन का सर्वदा व्यवहारिक जीवन में उपयोग करना चाहिए। कलीसिया के अगुवे होने के नाते, आप प्राय: किन प्रलोभनों या परीक्षाओं का सामना करते हैं? क्या आपको इस बात को जानने से शक्ति प्राप्त होती है कि यीशु ने ठीक ऐसी ही परीक्षाओं पर विजय प्राप्त की है? क्या आप इस बात पर विश्वास करते हैं कि अगर यीशु हम में है, तब हमें भी विजय प्राप्त हो सकती है? एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें कि आपको भी इन समस्याओं पर विजय मिल सके।

च. छुटकारे का तरीका: जी उठे मसीह और पतित आदम की तुलना।

१. अनाज्ञाकारिता के साथ आज्ञाकारिता की तुलना।

क. रोमियों ५:१९ का अध्ययन करें।

१) पहला आदम गिर गया। वह अनाज्ञाकारी था।

२) दूसरा आदम उठ खड़ा हुआ। वह आज्ञाकारी था।

ख. याद रखें, आज्ञाकारिता को सीखा गया था, और उसे प्रलोभनों पर जीत पाकर प्रमाणित किया गया था।

१) उसके पास ईश्वरीय स्वभाव होने पर भी वह मनुष्यों की उन सारी वास्तविकताओं से अनजाना या अनभिज्ञ नहीं था जिनका सामना मनुष्य करते हैं।

२) उसके मानवीय स्वभाव ने आगे बढ़कर एक नैतिक कार्य का रूप ले लिया।

टिप्पणियाँ —

ग. इब्रानियों ५:८ का अवलोकन करें।

१) छुटकारा मसीह के मानवीय पक्ष पर ध्यान देता है।

२) यह आज्ञाकारिता के अभ्यास का सार है जो उसने कष्टों को सहने के द्वारा **सीखी** जिसके लिए इब्रानियों का लेखकर भी कहता हैः "और सिद्ध बनकर अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया।"

२. नम्रता की तुलना घमण्ड के साथ।

क. उत्पत्ति ३:५ ओर फिलिप्पियों २:६ की तुलना करें।

१) पहला आदम पाप में गिर गया। वह परमेश्वर के समान होना चाहता था। आदम मनुष्य था और वह अपने आप को परमेश्वर बनाना चाहता था।

२) दूसरा आदम उठ खड़ा हुआ। उसने ईश्वरत्व की समानता को कोई रखने वाली चीज़ न माना।

३) यीशु परमेश्वर है और वही परमेश्वर अपने आपको छोटा करके मनुष्य के समान बनने के लिए इच्छुक था। इसी तरह से, परमेश्वर ने इससे अपने प्रेम को प्रगट किया कि उसने मानवजाति के छुटकारे के लिए स्वयं मसीह का रूप धारण कर लिया।

ख. छुटकारा तब आया जब मसीह ने मनुष्य के घमण्ड के बदले, जिसके कारण उसका पतन हुआ था, परमेश्वर की नम्रता को प्रगट किया, जिससे कारण उसें ऊंचा स्थान प्राप्त हुआ।

चर्चा का बिन्दु

यदि हमें आज्ञाकारिता और नम्रता के कारण छुटकारा प्राप्त हुआ है तो हम, अपने जीवन में अनाज्ञाकारिता और घमण्ड को क्यों स्थान देते हैं? समस्या और सुझाए गये समाधानों पर चर्चा करें।

टिप्पणियाँ —

छ. छुटकारे का परिणामः पुनः प्राप्त करना, पराजित करना, पार करना।

१. छिनी हुई चीज़ों को फिर से प्राप्त करना।

क. परमेश्वर के साथ सम्बन्ध को वापस पाना।

१) मनुष्य की सर्वोच्च बुलाहट परमेश्वर को जानना है। मनुष्य को इस तरह से बनाया गया था कि वह परमेश्वर के साथ रिश्ता बनाकर अपने जीवन में उसकी योजना को जान सके।

२) लेकिन जब आदम ने पाप किया, तब उसके और परमेश्वर के बीच में एक दीवार बन गयी।

क) पहले आदम ने दीवार खड़ी की। परन्तु दूसरे आदम ने उस दीवार को हमेशा हमेशा के लिए ढा दिया।

ख) यीशु ने मनुष्यों पर परमेश्वर को प्रगट किया। उसने उस दीवार को तोड़ डाला जिस दीवार को आदम ने बनाया था। वह अब एक ऐसे माध्यम के रूप में खड़ा है जिसकी सहायता से मनुष्य परमेश्वर के साथ संगति कर सकता है।

ग) छुटकारे के अन्तर्गत, मनुष्य के जीवन में परमेश्वर के सर्वोच्च उद्देश्य को पूरा करने के लिए मसीह एक मध्यस्थ बना है।

ख. मनुष्य की महिमा को पुनः प्राप्त करना।

१) मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ पहिचान यह है कि उसे परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है। उसमें वह महिमा शामिल है जो उसके पास पहले थी (२कुरिन्थियों ३:१८ व रोमियों ५:२)।

२) आदम ने इस महिमा को खो दिया। उसने उस पर अधिकार खो दिया।

३) रोमियों ३:२३ पर अध्ययन करें।

क) भाव "से रहित" ग्रीक भाषा के शब्द "usterontai" से आता है। इस शब्द अर्थ या तो "पहुंचने में असफल" या "जब्त किया गया" हो सकता है।

ख) मनुष्य के पास जो महिमा पहले थी वह उसके पतन के समय में उससे **जब्त** कर ली गयी।

ग) उसे मसीह में फिर से प्राप्त कर लिया गया है, "हम तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं" (२ कुरि. ३:१८)।

टिप्पणियाँ —

२. जो पहले जीता था उसे हराना।

क. क्योंकि पहले आदम ने वाटिका में अपने महिमा को "खो" दिया था, इसलिए दूसरे आदम को शैतान, मृत्यु और पाप को क्रूस पर "हराना" बहुत ज़रूरी था, जिससे वह मनुष्य को उसकी महिमा और पिता को आनन्द प्रदान कर सके।

ख. दूसरा आदम ऐसे व्यक्ति के रूप में सामने आया जिसने सारी चीज़ों को वापस लिया और शत्रु को हराया।

१) क्रूस पर यीशु ने शैतान, मृत्यु और कब्र को हरा दिया। उसने मनुष्यों के लिए एक ऐसे स्थान पर कब्ज़ा कर लिया है जो "सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ्य और प्रभुता के और हर एक नाम के ऊपर है।" (इफिसियों १:२१)।

२) मनुष्य इस विजय की लूट में कुछ इस तरह से सहभागी है अर्थात उसे "मसीह में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया है।" (इफिसियों २:६)।

ग. जब यीशु ने क्रूस पर शैतान को हराया, तब उसने मृत्यु को हरा दिया।

१) मनुष्य के लिए बनायी गयी मूल योजना में मृत्यु शामिल नहीं थी (उत्पत्ति २:१७)।

२) दूसरे पुनरूत्थान के द्वारा, दूसरे आदम ने मृत्यु को हरा दिया (रोमियों ६:९)।

३) दूसरे आदम की मृत्यु के द्वारा सदा सर्वदा के लिए मृत्यु की प्रभुता समाप्त हो गयी (१ कुरि. १५:२६)। हम मृत्यु से स्वतन्त्र हो गये हैं (इब्रानियों २:१४, १५)।

३. पूरा करने के मामले में भी वह पहले आदम को पीछे छोड़ देता है। दूसरा आदम मनुष्य के लिए परमेश्वर की योजना को पूरा करने के क्षेत्र में पहले आदम को पीछे छोड़ देता है।

टिप्पणियाँ —

चर्चा का बिन्दु

निम्नलिखित चित्र का अध्ययन करें और पहले और दूसरे आदम पर चर्चा को प्रोत्साहित करें।

पहले आदम में	दूसरे आदम में	बाइबल के वचन
सम्पूर्ण मानवजाति पापी ठहरी	बहुत से लोग धर्मी ठहरेंगे	रोमियों ५:१९
हमें मृत्यु की सज़ा मिली है	हम अनंत जीवन पाते हैं	रोमियों ५:१२, २१ १ कुरि. १५:२६
हम उसके पापी स्वभाव के भागीदार हो जाते हैं	हम नयी सृष्टि हैं	उत्प. ५:३ २ कुरि. ५:१७
हमारे लिए बिना रुके निरंतर यातनाएं मिलना तय हैं	हम उस में पाए जाने वाले अनंत विश्राम में स्वतंत्र हैं	इब्रानियों ४:१-३ गलातियों ५:१
हम पर दण्ड की आज्ञा हो चुकी है	हमें जीवन मिला और धर्मी ठहराया गया है	रोमियों ६:१८

ज. आदम की तुलना में मसीह की श्रेष्ठता।

१. यह बात सत्य है कि छुटकारा पाये हुए व्यक्ति में दो स्वभाव पाये जाते हैं। वे दोनों स्वभाव आपस में लड़ाई लड़ते हैं। लेकिन यह बात ध्यान देने वाली है कि पौलुस उन दोनों को समान नहीं ठहराता है।

क. दूसरे आदम के कामों के परिणाम स्वरूप प्राप्त शक्ति पहले आदम के कामों से प्राप्त शक्ति से श्रेष्ठ है।

ख. अनुग्रह की शक्ति पाप की शक्ति से बढ़कर है (रोमियों ५:२०)।

ग. दूसरे आदम और पहले आदम का सम्बन्ध सापेक्ष है।

टिप्पणियाँ —

लेकिन दूसरा आदम "श्रेष्ठ" है (रोमियों ५:९, १०, १५, १७, २०)।

१) रोमियों ५:१२-२१ में पौलुस मसीह की एक शब्द अर्थात **"एक मनुष्य"** के रूप में तस्वीर प्रदान करता है, जो हर बात में **एक** (आदम) से श्रेष्ठ ठहरता है।

२) केवल एक ही तरीके से दोनों आदम एक दूसरे से जुड़े हुए हैं या सम्बन्ध रखते हैं और वह यह है कि दूसरा आदम पहले आदम से हर बात में श्रेष्ठ है।

३) पौलुस ने यह देखने के लिए आदम पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया कि वह किस प्रकार से मसीह से जुड़ा हुआ है। वरन उसने मसीह पर ध्यान केन्द्रित करते हुए देखने का प्रयास किया कि वह किस प्रकार से आदम से जुड़ा हुआ है।

२. परमेश्वर मनुष्य को पाते हैं। मनुष्य परमेश्वर को नहीं पाता (यूहन्ना १५:१५; लूका १५:१-७; रोमियों १०:६, ७)।

क. परमेश्वर की करूणा मनुष्य के पापों पर बहुतायत से प्रबल होती है।

ख. प्रत्येक क्षेत्र में, जो कुछ हमें दूसरे आदम में प्राप्त होता हैं वह पहले आदम की तुलना में श्रेष्ठ व उत्तम होता है।

चर्चा का बिन्दु

निम्नलिखित चित्र का उपयोग करते हुए वर्णन और चर्चा करने में सहायता करें कि एक विश्वासी होने के नाते हमें पहले आदम की तुलना में दूसरे आदम में अधिक चीज़ें कैसे प्राप्त होती हैं।

पहला आदम	दूसरा आदम	बाइबल के वचन
परमेश्वर की समानता और स्वरूप में बनाया गया था	उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप	उत्प. १:२६ इब्रा. १:३
अपने प्राण को परमेश्वर से प्राप्त किया जिसने उसके नथनों में जीवन की श्वांस को फूंका था	एक जीवन दायक आत्मा बन गया	उत्प. २:७ १ कुरि. १५:४५
मिट्टी से बनाय गया/ज़मीनी	स्वर्ग से था/स्वर्गीय	१ कुरि. १५:४७

छुटकारा व उद्धार

टिप्पणियाँ –

I. मसीहः छुटकारे की दौड़ का शिरोमणी।

1. मसीह "नये मनुष्य" का सिर है, और आदम पुराने मनुष्य का सिर है।

क. इस वाक्य को इस समझ के साथ समझना चाहिए कि कोई एक पपित मानवता (आदम) नहीं है और न ही कोई नयी मानवता है ("नये" का अर्थ कि ऐसी कोई जाति पहले थी ही नहीं)।

ख. मसीह कोई नया आदम नहीं है। वह दूसरा आदम है। अर्थात वह मूल आदम है।

१) अतः, हम पतित मानव जाति और **छुटकारा पायी हुई** (जिसे उसकी मूल अवस्था प्रदान की गयी है) मानवजाति पर बात कर रहे हैं।

२) मसीही किसी **नयी** जाति का प्रतिनिधी नहीं है वह एक सिद्ध मानवजाति का प्रतिनिधित्व करता है। वह मूल आदम के समान है, लेकिन उसकी विजय के कारण आदम से श्रेष्ठ ठहरता है। यही छुटकारा है।

2. मानवतावाद, मानवता को लेकर दुविधा में है।

क. मानवतावादी केवल पहले आदम पर भी अपना ध्यान लगाता है। उसे केवल मानवता से ही मतबल होता है, जिसके अन्तर्गत वह एक भला मनुष्य होने पर विश्वास करता है जिसे किसी छुटकारे की आवश्यकता नहीं होती। वास्तव में देखें तो,उसे टूटी, गिरी और भ्रष्ट चीज़ों से प्रेम होता है।

१) पहला आदम उसका ईश्वर होता है।

२) इसलिए, वह पहले आदम के साथ मर जाता है (देखें रोमियों ६:२३)।

ख. मसीही जन दूसरे आदम की ओर ध्यान लगाता है। वह सच्ची मानवता की खोज करता है, जो मसीह में होकर पवित्र आत्मा के वास करने के द्वारा नयी होती है।

१) दूसरा आदम उसका परमेश्वर होता है।

२) इसलिए वह मसीह के साथ जी उठता है (१ कुरि. १५:२, २०, २३)।

टिप्पणियाँ —

ञ. पाठ्यक्रम का निष्कर्ष।

१. हमारे स्वाभाविक व शारीरिक जन्म के समय पर हमें पहले आदम का अनुभव होता है। लेकिन उद्धार पाने के लिए हमें **नया** जन्म लेने की आवश्यकता होती है। इसके लिए हमें दूसरे आदम के अनुभव को प्राप्त करने की ज़रूरत पड़ती है। हमारे दो जन्म होने के कारण, हम में दो प्रकार के स्वभाव विद्यमान हैं। ये दोनों स्वभाव आपस में लगातार लड़ाई लड़ते हैं। लेकिन हम पहले आदम की तुलना में दूसरे आदम की श्रेष्ठता पर और इसी प्रकार "पुराने" स्वभाव की तुलना में "नये" स्वभाव की श्रेष्ठता पर आनन्द मना सकते है।

२. आदम असफल हुआ। मसीह ने सफलता प्राप्त की। जिस हद तक हम नये स्वभाव अर्थात मसीह को अपने जीवन पर राज्य करने का अधिकार देते हैं उसी हद तक हम भी सफल होते हैं। **हालेलुय्याह!**

छुटकारा व उद्धार

टिप्पणियाँ –